بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA
Mob:9682536974, E-Mail.: ansarullah@qadian.in 15.07.2022 محلہ احمدیہ قادیان143516 ضلع گورداسپور(پنجاب) انڈیا

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के महान स्तरीय ख़लीफ़: राशिद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु के सद्गुणों का ईमान वर्धक वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 15 जौलाई 2022, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद, टिलफ़ोर्ड यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ.

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

मुसलमानों की मुर्तद बाग़ियों के विरुद्ध काररवाइयों का वर्णन हो रहा था। हज़रत मुहाजिर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु को जब सनआ में मुर्तदों के विरुद्ध सफलताओं के बाद स्थाईत्व प्राप्त हो गया तो हज़रत अबू बकर रज़ीयल्लाहु अन्हु को उनकी गतिविधियों से अवगत किया। हज़रत अबू बकर रज़ीयल्लाहु अन्हु ने मुआज़ बिन जबल रज़ीयल्लाहु अन्हु तथा यमन के अन्य कार्यकर्ताओं को अधिकार दिया कि चाहें तो यमन में रहें अथवा अपने स्थान पर किसी को नियुक्त करके मदीना वापस आ जाएँ, जिसके बाद सभी लोग मदीना वापस आ गए जबकि हज़रत मुहाजिर रज़ीयल्लाहु अन्हु को आदेश मिला कि हज़रत इकरिमा रज़ीयल्लाहु अन्हु के साथ मिल कर हिज़रे मौत में ज़ियाद बिन लबीद रज़ीयल्लाहु अन्हु का साथ दो। कन्दा क़बीले के मुर्तद लोग तथा ज़कात देने से इंकारी लोगों के विरुद्ध हज़रत ज़ियाद बिन लबीद रज़ीयल्लाहु अन्हु किसी प्रकार को काररवाई करने से रुके रहे ताकि हज़रत मुहाजिर बिन अबू उमय्या वहाँ आ जाएँ। हज़रत मुहाजिर बिन अबू उमय्या सनआ से तथा हज़रत इकरिमा रज़ीयल्लाहु अन्हु अबीन से हज़रत अबू बकर रज़ीयल्लाहु अन्हु के आदेश का पालन करते हुए हिज़रे मौत के इरादे से रवाना हुए तथा मआरब नामक स्थान पर दोनों मिल गए।

कन्दा के एक युवा ने हज़रत ज़ियाद रज़ीयल्लाहु अन्हु को ग़लती से अपने भाई की ऊँटनी ज़कात के लिए पेश कर दी। हज़रत ज़ियाद रज़ीयल्लाहु अन्हु ने उसको आग से दाग़ कर ज़कात का निशान लगा

दिया। तत्पश्चात उस युवा ने ऊँटनी को बदलने के लिए कहा किन्तु हज़रत ज़ियाद रज़ीयल्लाहु अन्हु न माने। उस युवा ने अपने क़बीले के लोगों को सहायता के लिए पुकारा। अबू समीत तथा उसके साथियों ने ज़बरदस्ती ऊँटनी खोल दी। हज़रत ज़ियाद रज़ीयल्लाहु अन्हु ने अबू समीत तथा उसके साथियों को क़ैद कर लिया तथा ऊँटनी का भी क़बज़े में ले लिया। उन लोगों ने दूसरे क़बीले के लोगों को भी मदद के लिए पुकारा। हज़रत ज़ियाद रज़ीयल्लाहु अन्हु ने हमला करके उनके बहुत से लोगों का वध कर दिया जबकि कुछ लोग भाग गए। हज़रत ज़ियाद रज़ीयल्लाहु अन्हु ने उनके क़ैदी भी रिहा कर दिए परन्तु उन्होंने वापस जाकर युद्ध की तय्यारी शुरु कर दी। अतः बनू उमरू तथा बनू हारिस और अशअस बिन क़ैस तथा समअत बिन असवद ने ज़कात देने से इंकार कर दिया और मुर्तद हो गए। हज़रत ज़ियाद रज़ीयल्लाहु अन्हु ने बनू अमरू पर हमला कर दिया, उनके बहुत से आदमियों की हत्या कर दी तथा एक बड़ी संख्या को क़ैद करके मदीने रवाना कर दिया। रास्ते में अशअस तथा बनू हारिस के लोगों ने हमला करके मुसलमानों से अपने बन्दी छुड़वा लिए। इस घटना के बाद आस पास के कई क़बीले भी उन लोगों के साथ मिल गए तथा उन्होंने भी मुर्तद होने की घोषणा कर दी।

कन्दा क़बीले के लोग हिज़रे मौत के निकट नजीर नामक एक क़िले में शरणागत हो गए। हज़रत ज़ियाद रज़ीयल्लाहु अन्हु, हज़रत मुहाजिर रज़ीयल्लाहु अन्हु और हज़रत इकरिमा रज़ीयल्लाहु अन्हु की सेना में पाँच हज़ार मुहाजिर तथा अन्सारी सहाबा रज़ीयल्लाहु अन्हु एवं उसमें अन्य क़बीले भी शामिल थे। नजीर नामक क़िले में शरणागत लोग इतनी बड़ी सेना को दख कर भयभीत हो गए। इन शरणागत लोगों के सरदार अशअस ने अपने तथा अपने नौ साथियों के लिए शरण दिए जान की शर्त पर क़िले का द्वार खोल दिया। घोर युद्ध के बाद मुसलमानों को विजय प्राप्त हुई। हज़रत इकरिमा रज़ीयल्लाहु अन्हु विजय की सूचना तथा क़ैदियों के साथ हज़रत अबू बकर रज़ीयल्लाहु अन्हु की सेवा में उपस्थित हुए। हज़रत अबू बकर रज़ीयल्लाहु अन्हु ने समस्त बन्दियों को स्वतंत्र कर दिया। हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु अन्हु के दौर में इराक़ तथा शाम के युद्धों में अशअस ने विशेष योगयताएँ दिखाईं जिसके कारण फिर उनकी प्रतिष्ठा बढ़ गई। हज़रत मुहाजिर रज़ीयल्लाहु अन्हु और हज़रत इकरिमा रज़ीयल्लाहु अन्हु पूरी तरह अमन व शांति स्थापित होने तक हिज़रे मौत तथा कन्दा में ही ठहरे रहे। मुर्तद बाग़ियों के साथ ये अन्तिम युद्ध थे, इनके बाद अरब देश में सम्पूर्ण रूप से विद्रोह समाप्त हो गया तथा समस्त क़बीले इस्लामी शासन के आधीन आ गए।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीयल्लाहु अन्हु ने बयान फ़रमाया है कि मौलाना मौदूदी साहब का यह लिखना कि सहाबियों ने हर उस व्यक्ति के विरुद्ध लड़ाई की जिसने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद नबुव्वत का दावा किया, सहाबियों के कथनों के विरुद्ध बात है। मौलाना को इस्लामी लिट्रेचर के अध्ययन का बहुत बड़ा दावा है, काश वे इस बात के विषय में अपना मत अभिव्यक्त करने से पहले इस्लाम का इतिहास पढ़ कर देख लेते तो उन्हें पता चल जाता कि मुसैलमा कज़्ज़ाब, असवद अंसी,

सजाह पुत्री हारिस तथा तुलैहा बिन ख़ुवैलद असदी, ये सबके सब ऐसे लोग थे जिन्होंने मदीने के शासन का आज्ञा पालन करने से इंकार कर दिया था तथा अपने अपने क्षेत्रों में अपने शासनों की घोषणा कर दी थी। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीयल्लाहु अन्हु लिखते हैं कि सहाबियों ने जिन लोगों से लड़ाई की थी वे देश द्रोही थे, टैक्स देने से इंकार कर दिया था और मदीने पर हमला कर दिया था। जो लोग तोड़ मरोड़ कर इस्लाम का इतिहास पेश करते हैं वे इस्लाम की सेवा नहीं कर रहे, यदि उनके सम्मुख इस्लाम की सेवा है तो वे सत्य को सवाच्च रखें तथा अनुचित बयानों और घटनाओं को तोड़ मरोड़ कर पेश करने से पूर्ण रूप से बचें।

एक इतिहासकार ने लिखा है कि अब अरब की समस्त बग़ावतों का विनाश हो चुका था तथा समस्त मुर्तदों को दबा लिया गया था। हज़रत अबू बकर रज़ीयल्लाहु अन्हु ने इस देशव्यापी उपद्रव का जिस योजनाबद्ध एवं तेज़ी के साथ विध्वंस किया, वे आप रज़ी. की उत्तम योग्यताओं को दर्शाता हैं तथा साफ़ दिखाई देता है कि किस प्रकार क़दम क़दम पर आपको इलाही सहायता एवं समर्थन प्राप्त था। एक साल से भी कम अवधि में इस्लाम से विमुखता एवं बग़ावत पर क़ाबू पा लेना अरब देश की धरती पर इस्लाम के शासन को पुनः स्थापित कर देना, एक दुर्लभ कारनामा है। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु अन्हु को इस्लाम के ग़ल्बः से अत्यंत ख़ुशी थी किन्तु इस प्रसन्नता में गर्व एवं अहंकार का नाम तक नहीं था क्यूँकि वे जानते थे कि यह जो कुछ हुआ केवल अल्लाह की कृपा से तथा उसके उपकार से हुआ, उनमें यह शक्ति नहीं थी कि वे मुट्ठी भर मुसलमानों के द्वारा पूरे अरब देश के मुर्तदो की विशाल सेनाओं का मुक़ाबला करके, उन्हें हराकर इस्लाम का झंडा बड़ी शान एवं मर्यादा के साथ दोबारा बुलन्द कर सकते।

मुर्तद बाग़ियों के युद्धों तथा सैन्य अभियानों के समाप्त होने के बाद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु अन्हु भविष्य की योजनाओं के विषय में विचार एवं मनन में व्यस्त थे कि अरब एवं इस्लाम के पुराने दुश्मन ईरान तथा रोम के शासनों से स्थाई रूप में सुरक्षित रहने के लिए क्या योजना बनाई जाए क्यूंकि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पवित्र जीवन काल में भी ये दोनों शक्तियाँ अरब को अपने आधीन रखना चाहती थीं और जब आप स. का निधन हो गया तथा अनेक क्षेत्रों तथा क़बीलों में इस्लाम से विमुख होने और बग़ावत करने की आग ने मदीने की रियासत को अपनी लपेट में ले लिया तो इस अवसर का लाभ लेते हुए हरक़ुल की सेनाएँ शाम देश में तथा ईरान की सेनाएँ इराक़ में जमा होने लगीं। हज़रत अबू बकर रज़ीयल्लाहु अन्हु ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ीयल्लाहु अन्हु को लिखा कि इराक़ पहुंच कर लोगों को अपने साथ मिलाएँ तथा उन्हें अल्लाह के रास्ते की ओर दावत दें, यदि वे स्वीकार कर लें तो ठीक अन्यथा उनसे जिज़्या वसूल करें, तथा यदि वे इंकार कर दें तो फिर उनके साथ युद्ध करें।

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ीयल्लाहु अन्हु की सेना संख्या में बहुत कम थी क्यूँकि एक तो उसका बड़ा भाग यमामा के युद्ध में काम आ चुका था, दूसरे हज़रत अबू बकर रज़ीयल्लाहु अन्हु ने हिदायत की थी कि सेना में शामिल होने के लिए किसी के साथ ज़ोर ज़बरदस्ती न की जाए तथा न ही किसी पहले

के मुर्तद को जो दोबारा इस्लाम ले भी आया हो, ख़लीफ़ः की अनुमति के बिना इस्लाम की सेना में शामिल किया जाए। अतः हज़रत ख़ालिद की और अधिक सहायता के निवेदन पर हज़रत अबू बकर रज़ीयल्लाहु अन्हु ने केवल एक व्यक्ति क़अक़ाअ बिन उमरू को रवाना फ़रमाया तथा लोगों के आश्चर्य पर फ़रमाया कि जिस सेना में क़अक़ाअ जैसा व्यक्ति मौजूद हो वह कभी हार नहीं सकती। फिर हज़रत ख़ालिद रज़ीयल्लाहु अन्हु को लिखा कि वे उन लोगों को सेना में शामिल होने की प्रेरणा दें जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद सुदृढ़ रूप स इस्लाम पर क़ायम रहे और जिन्होंने मुर्तदों के विरुद्ध लड़ाईयों में भाग लिया। यह पत्र मिलने पर हज़रत ख़ालिद रज़ीयल्लाहु अन्हु ने अपनी सेना को संगठित करना शुरु कर दिया।

इराक़ क किसानों के सिलसिले में हज़र अबू बकर रज़ीयल्लाहु अन्हु की योजना के बारे में लिखा कि अरब के लोग इराक़ की ज़मीनों पर किसान के रूप में काम करते थे। ईरान के ज़मींदार अरबों पर अत्यधिक अत्याचार करते तथा उनके साथ ग़ुलामों से भी बुरा व्यवहार करते थे। हज़रत अबू बकर रज़ीयल्लाहु अन्हु ने आदेश दिया कि युद्ध के समय अरब के किसानों को कोई कष्ट न दिया जाए तथा किसी प्रकार का दुर्व्यवहार न किया जाए। उन्हें इस बात को याद दिलाना चाहिए कि यहाँ अरबों का शासन स्थापित होने से उनके पीड़ादायो जीवन के दिन समाप्त हो जाएँगे तथा अब वे अपनो जाति के लोगों के कारण वास्तविक न्याय एवं इंसाफ़ तथा उचित स्वतंत्रता एवं समानता का लाभ उठा सकेंगे। हज़रत अबू बकर रज़ीयल्लाहु अन्हु की इस योजना ने मुसमलानों को अत्यंत लाभ पहुंचाया, उनकी विजय के रास्ते में सरलताएँ पैदा हो गईं तथा उन्हें यह भय न रहा कि आगे बढ़ते समय कहीं पीछे से हमला होकर उनका रास्ता बन्द न हो जाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652
टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131